महुआ घटवारिन

परमान नदीक तटपर एकटा अमर प्रेम-बलिदान

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : परमान नदीक घाट

महुआ घटवारिन — परी जेकाँ सुन्दर, जेना गूथल आँटामे एक चुटकी केसर! मुदा रूपसँ बेसी अनमोल छल ओकर सतवंती-सतीत्व चरित्र — एहन गुण जे विपत्तिमे सेहो नहि डोलल।

ई गाथा परमान नदीक तटक थिक — जतय एकटा गरीब, विवश कन्या अपन माएक लोभ आ सौदागरक छलक बीच फँसल, आ अन्ततः अपन प्रेम आ स्वाभिमान दुनू लेल प्राण दऽ देलक। ई गाथा आइयो साओन-भादवक धारमे गूँजैत अछि — 'एकटा छलीह महुआ घटवारिन...'

अध्याय १ : सतमाएक घर

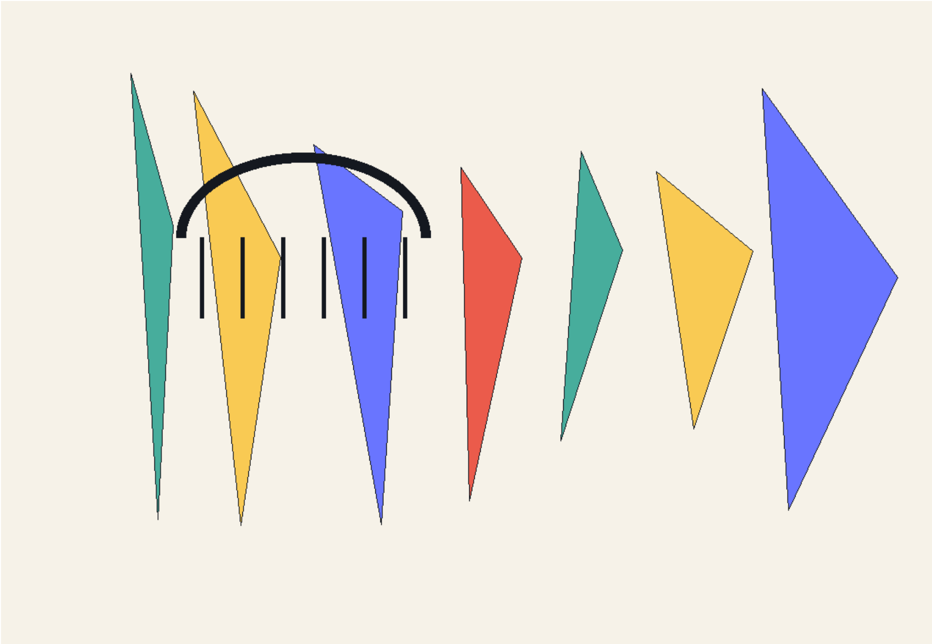

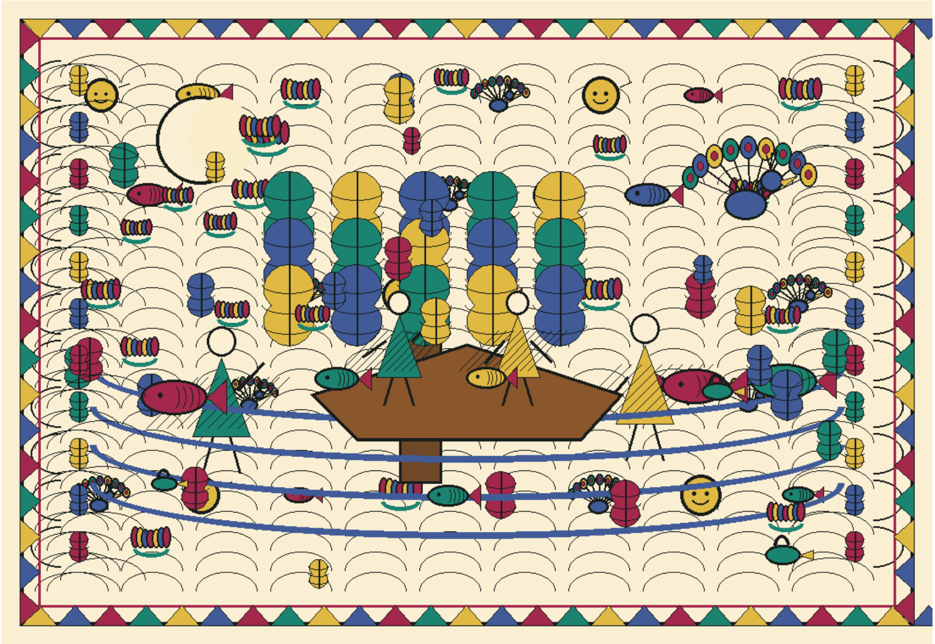

चित्र 1

महुआ घटवारिन परी जेकाँ सुन्दर छलीह — मुदा ओकर असली सुन्दरता ओकर सतवंती स्वभावमे छल, जे कोनो प्रलोभन वा विवशतासँ नहि डोलैत छल।

मुदा महुआक घर सुखी नहि छल। बाप गँजेरी आ शराबी छलाह — नशामे डूमल, अपन कर्तव्यसँ विमुख। माए सतमाए छलि — नजरि चोर, स्वार्थी, ममताविहीन।

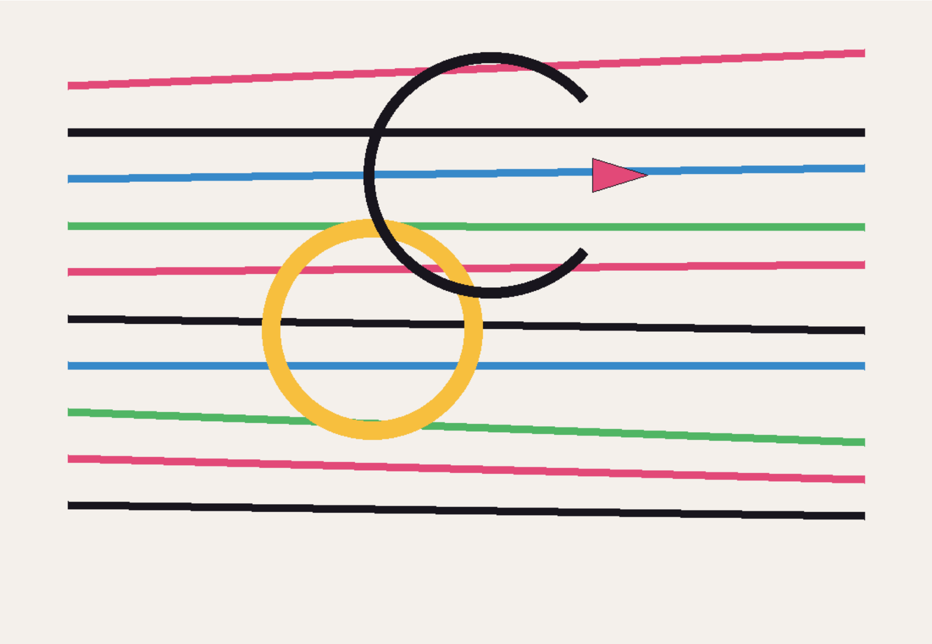

चित्र 2

घरमे सतमाएक राज छल — महुआक कोनो बात नहि सुनल जाइत छल। सोलह बरखक भऽ गेल छलीह महुआ, मुदा हुनकर बियाहक चिन्ता ककरो नहि छलनि — एहन उपेक्षा एकटा युवतीक लेल असहनीय छल।

परमान नदीक पुरनका घाटक मलाह सभ प्रार्थना करैत छथि — 'महुआक नावकेँ किनार लगा दियौक' — ई प्रार्थना महुआक प्रति समाजक चिन्ता आ स्नेह देखबैत अछि, भलहिं ओकर अपन घरमे ई स्नेह निपत्ता छल।

अध्याय २ : साओन-भादवक चेतावनी

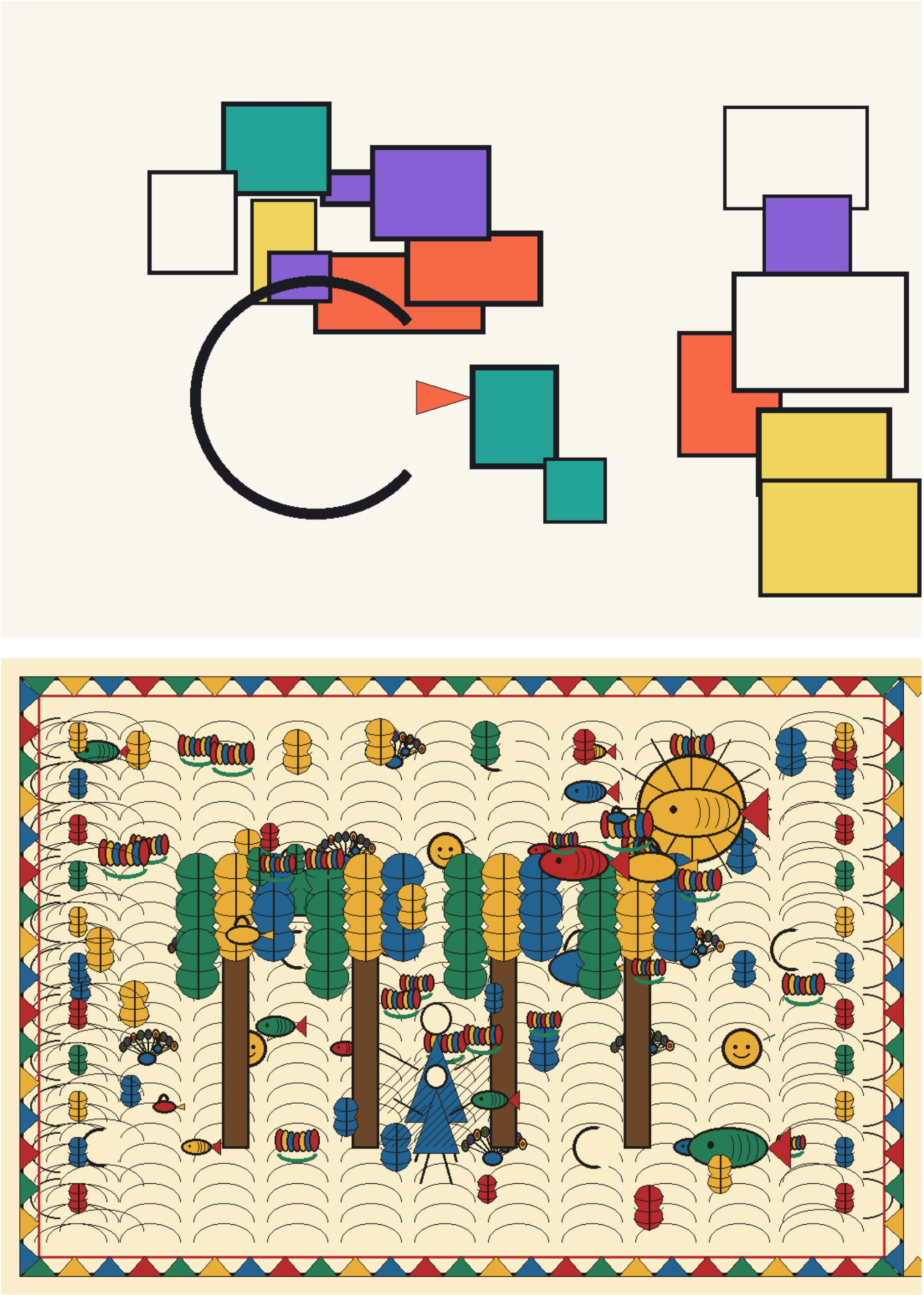

चित्र 3

साओन-भादवक भरल धारक बीच एकटा लोकगीत गूँजैत छल — 'साओन-भादवक, भरल धार, कम वयसक महुआ नहि जाऊ, एहि राति खेबय लेल नाह।' ई गीत महुआक प्रति समाजक चेतावनी आ चिन्ता दुनू व्यक्त करैत छल।

एहने साओन-भादवक एक रातिमे सतमाए एकटा नव योजना बनओलक। घाटपर एकटा वणिक् उतरल छल, आ सतमाए महुआकेँ ओकरा तेल लगएबाक हेतु पठबए चाहैत छलि।

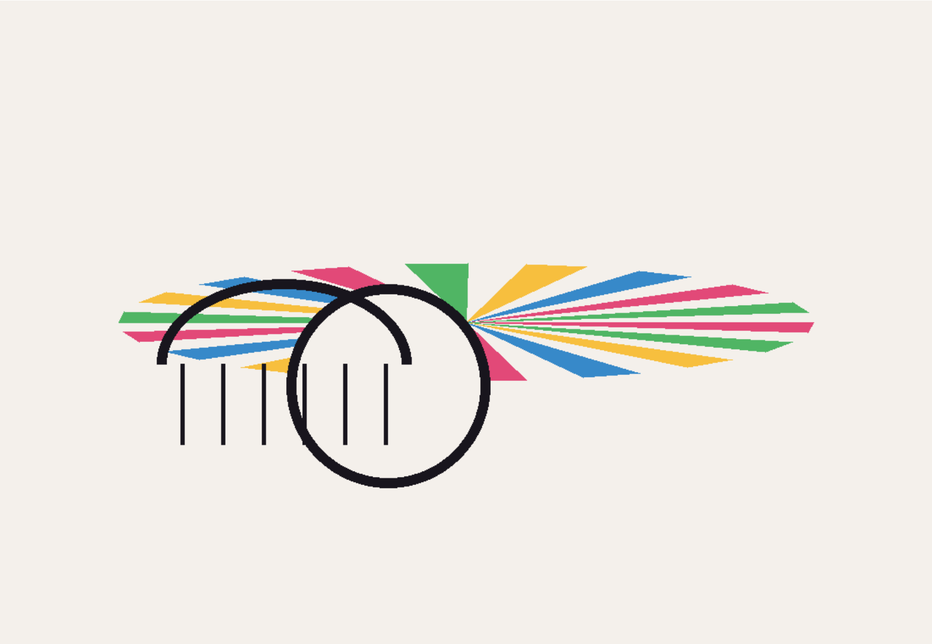

चित्र 4

महुआ जाए नहि चाहैत छलीह — ओकर मोनमे कोनो अनिष्टक आशंका छल। ओ अपन माएकेँ मोन पाड़ैत छलीह, ओकर ममता, ओकर संरक्षण — जे आब एहि सतमाएक घरमे नहि छल।

महुआक हृदयमे एकटा वेदना उठल — 'नोन चटा कैँ किए नहि मारलँह, पोसलँह एहि दिन खातिर?' — ई वाक्य महुआक गहींर पीड़ा प्रकट करैत छल: जँ एहि दिनक लेल पोसने रहथि, त' कोन काजक ई पालन-पोषण?

अध्याय ३ : विवश यात्रा

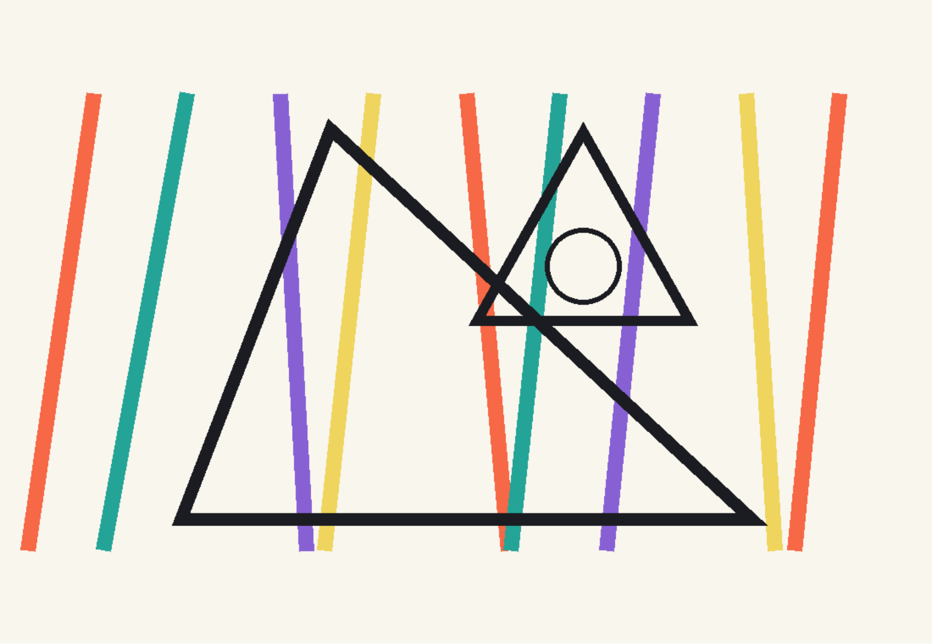

चित्र 5

मुदा सतमाए अपन निर्णयपर अडिग रहलि — साओन-भादवक ओही रातिमे पथिककेँ घाट पार करएबाक लेल महुआकेँ बलपूर्वक पठा देलक। महुआक इच्छा-अनिच्छाक कोनो मोल नहि छल।

महुआ विवश भऽ बिदा भेलीह। बीच रस्तामे ओ अपन सखी-बहिनपा फूलमतीसँ भेँट केलनि, आ दुनू भरि राति गप करैत रहलि — डर, चिन्ता, आ अनिश्चय साझा करैत।

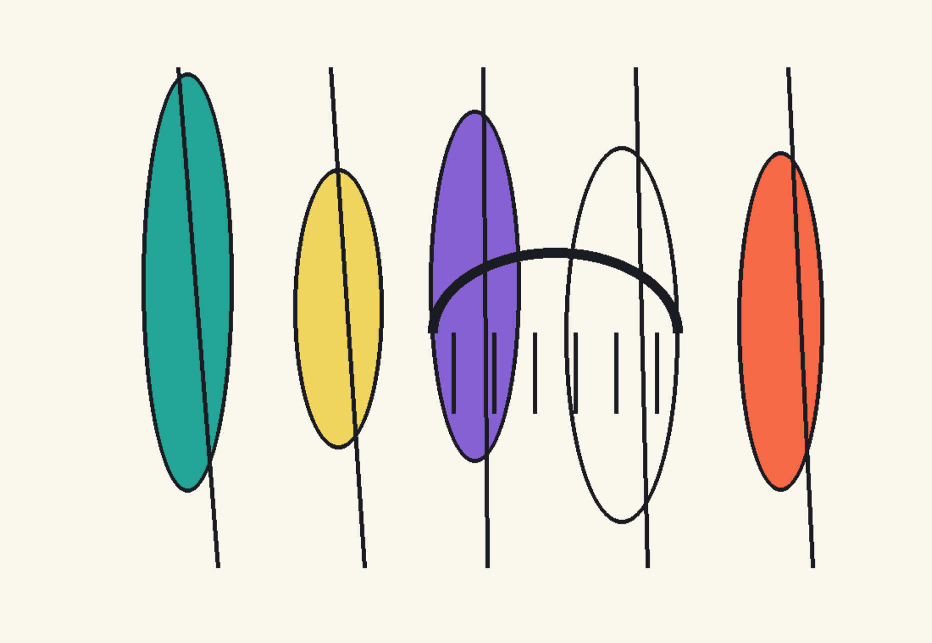

चित्र 6

महुआ अपन माएक व्यवहारपर विलाप करैत छलि — 'केहन माए अछि जे रातिमे घाट पार करेबाक लेल कहैत अछि!' सतमाएक तर्क सेहो कठोर छल — 'पथिक पाइबला होए आ बूढ़ होए त' तेल-मालिस करबामे कोनो हर्ज नहि। ओकरा जेबीसँ चारि पाइ निकालि लेल जाए, अहीमे बुधियारी अछि।'

फूलमती महुआकेँ ढाढ़स बन्हओलक — 'घबरायब नहि। जरेने रहू प्रेमक आगि, ओकरा लेल जे मोरंगमे आँगुर पर दिन गानि रहल अछि।' ई शब्द महुआक हृदयमे एकटा नाम जगओलक — मोरंगक ओ प्रेमी, जकर प्रतीक्षामे महुआ जीबैत छलि।

अध्याय ४ : मोरंगक स्मृति

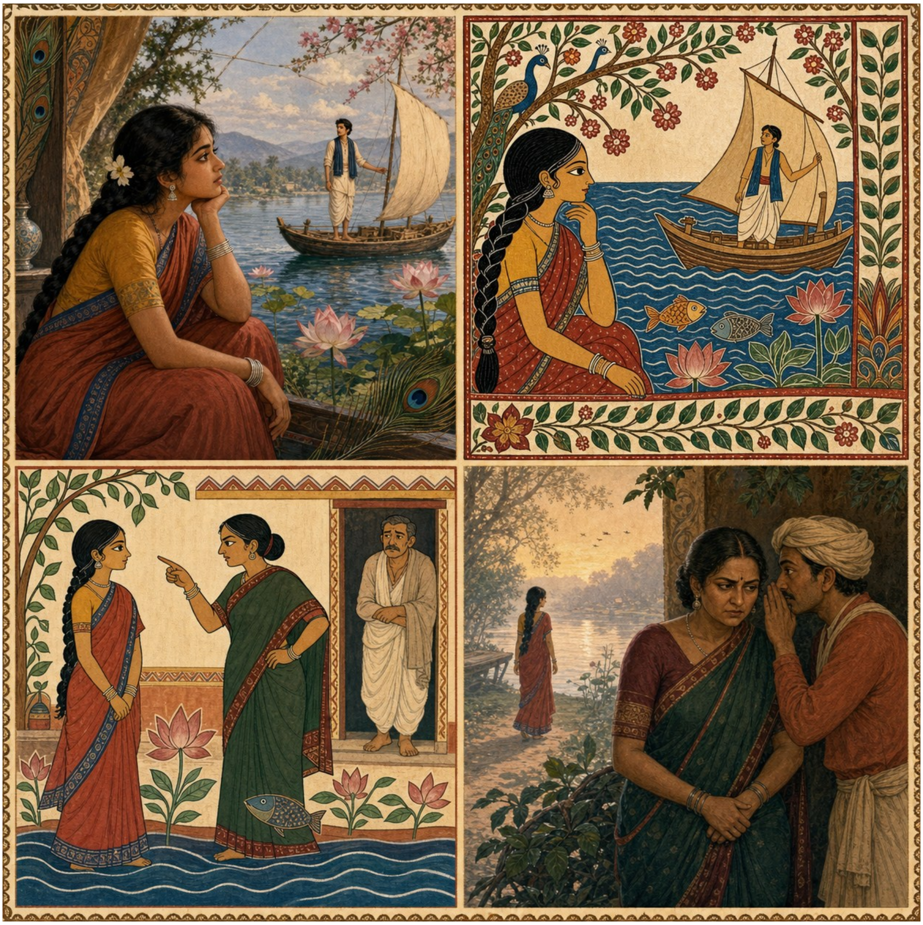

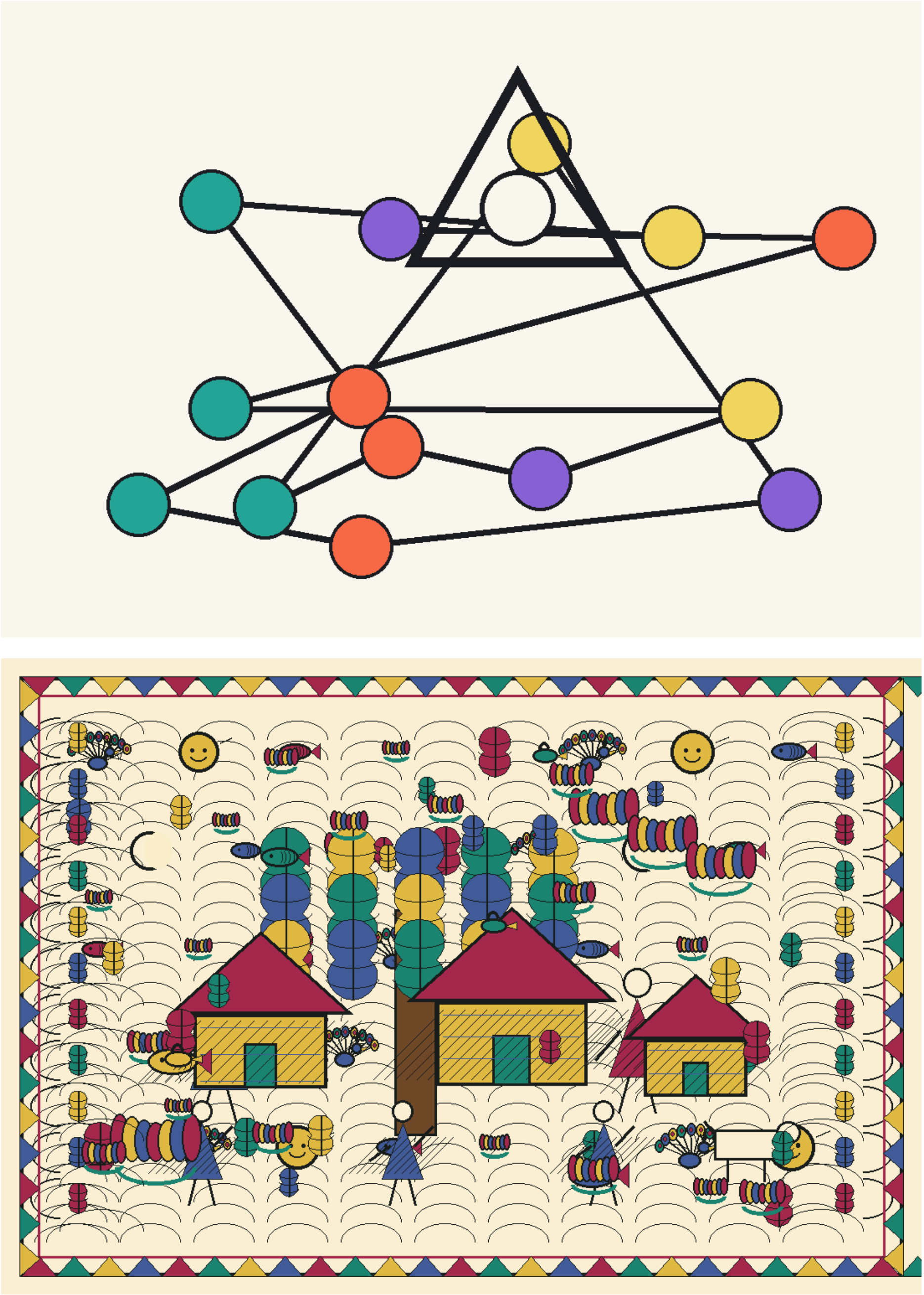

चित्र 7

मोरंगक नाम सुनिते महुआ उदास भऽ गेलि — दूर देशमे बैसल अपन प्रेमीक स्मृति ओकर हृदयकेँ कचोटलक। ओ आश्वस्त भेलि जे ओ फागुनमे आओत — ई प्रतीक्षा ओकर एकमात्र सम्बल छल।

भोरहरबामे महुआ गाम पहुँचलि, आ माए-सतमाए दस बात कहलकैक — ओल सन बोल, आरोप, अपमान। महुआ चुपचाप सहैत रहलि, कारण प्रतिवाद करबाक शक्ति ओकरा भेटले नहि छल एहि घरमे।

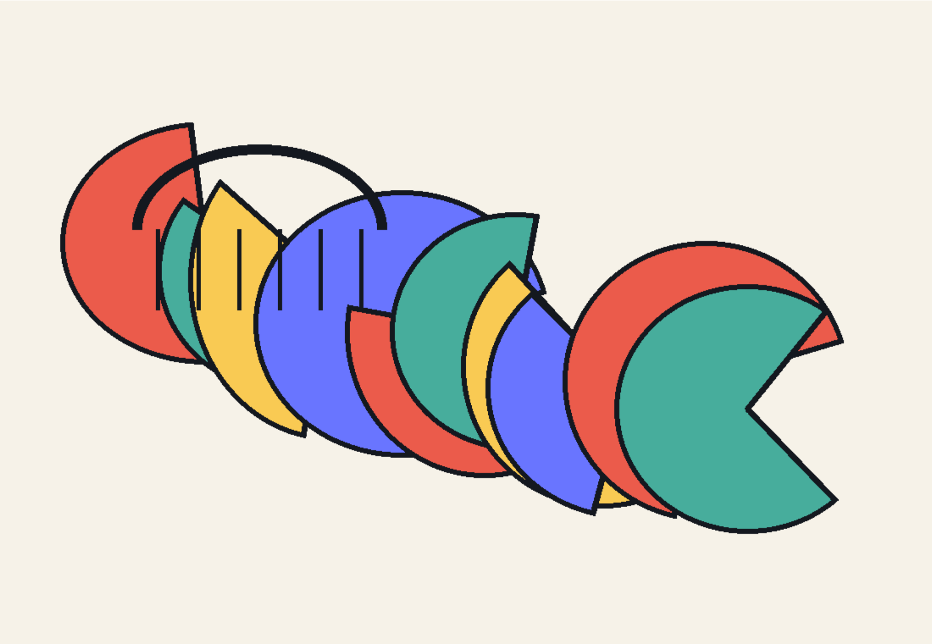

चित्र 8

बाप नशामे घर आयल त' माए ओकरो लात मारि भगा देलक — घरक ई कलह, ई अव्यवस्था महुआक लेल दैनिक जीवन बनि गेल छल। एहि बीच महुआ अपन सपना, अपन प्रेमकेँ मोनहि-मोन सम्हारने रहलि।

मुदा नियति एकटा नव विपत्तिक तैयारीमे छल। हरकारा आयल आ माएक कानमे एकटा गुप्त सन्देश देलक — ई सन्देश महुआक जीवनमे सभसँ पैघ धोखाक शुरुआत छल।

अध्याय ५ : धोखाक सौदा

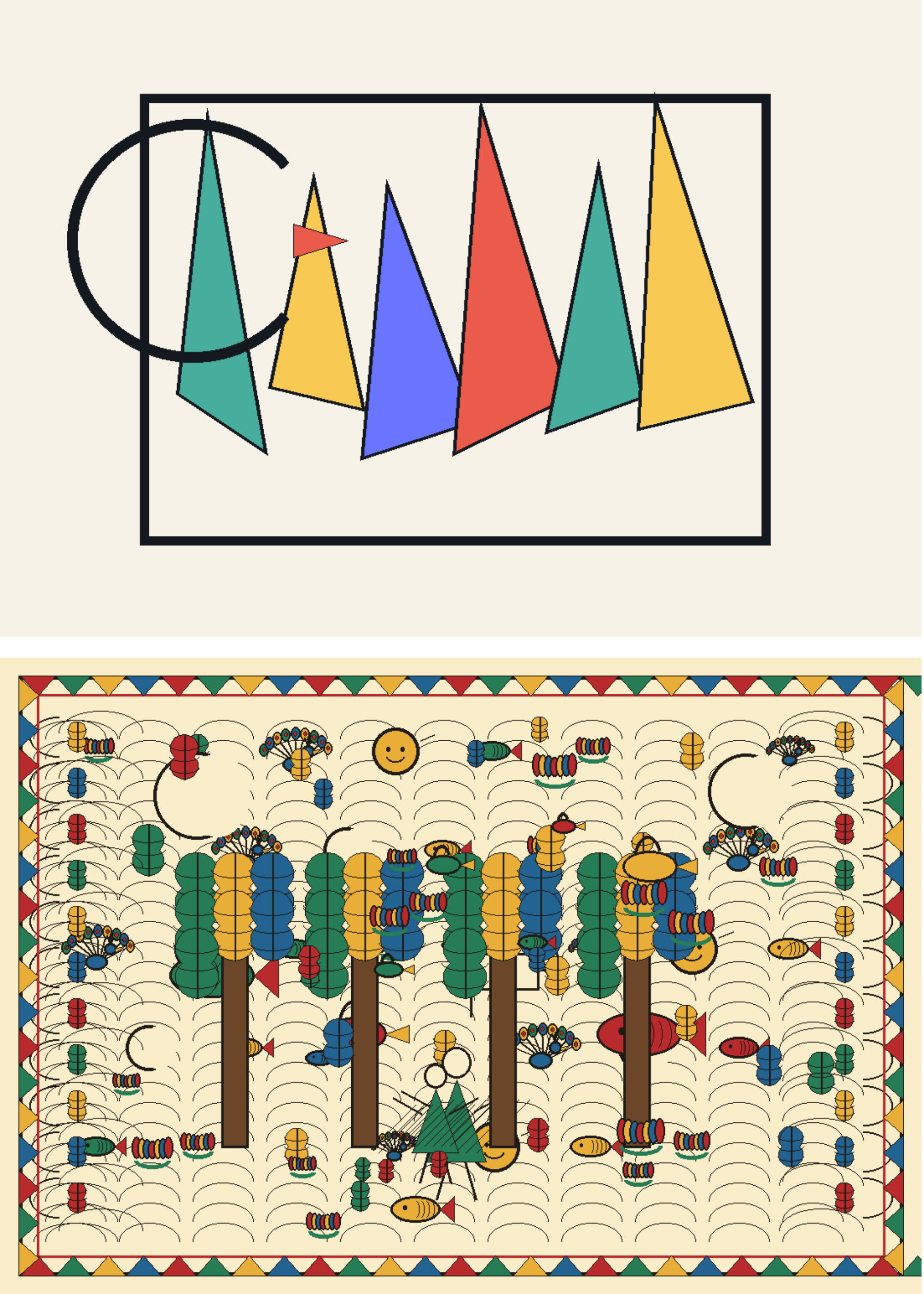

चित्र 9

हरकाराक सन्देशक बाद महुआ माएकेँ कहलक — 'अहाँ जे कहब, से हम करब' — ई समर्पण महुआक विवशता आ आज्ञाकारिताक चरम प्रदर्शन छल, बिनु ई बुझने जे आगाँ की लिखल अछि।

वणिकक आदमी आयल छल, आ ओकरा संग महुआ घाटपर पहुँचलि। वणिक दू सिपाहीक संग नावमे बैसल छल — साधारण देखबामे, मुदा एहिमे एकटा भयंकर सत्य नुकायल छल।

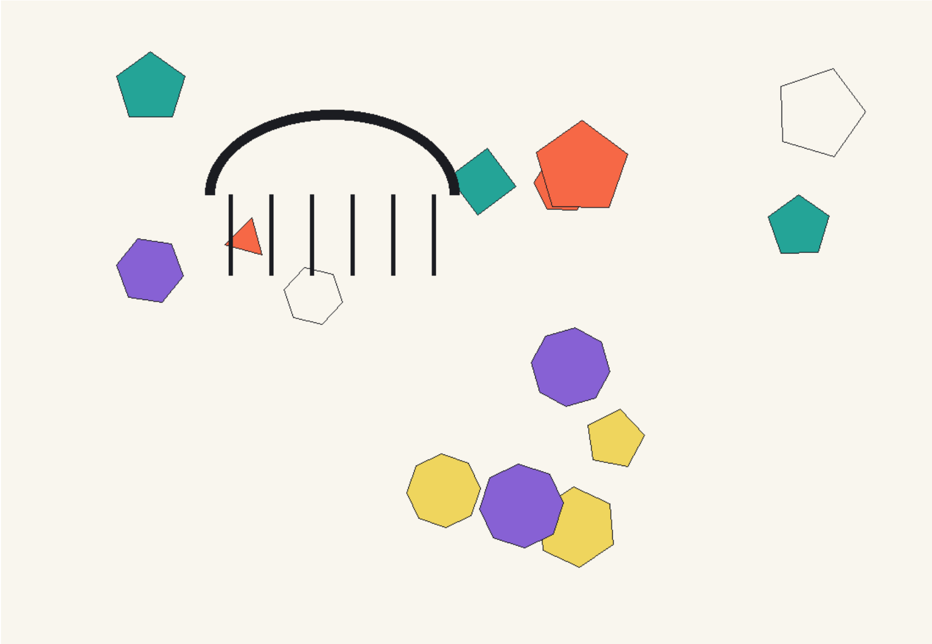

चित्र 10

महुआ नाव खेबए लागलि — विश्वाससँ, बिनु शंकाक। मुदा ओकरा नहि बूझल रहए जे ओकरा बेचि देल गेल छै! सतमाए अपन बेटीकेँ धनक बदलामे व्यापारीकेँ सौंपि देने छलि — मातृत्वक ई विश्वासघात असहनीय छल।

जखन सिपाही महुआसँ पतवार छीनि लेलक, तखने महुआकेँ आशंका भेल। सौदागर ओकरा कोरामे बैसाबए चाहलक — त' महुआ छटपटाय लागलि, अपन सतवंतीक रक्षामे।

अध्याय ६ : सौदागरक निर्ममता

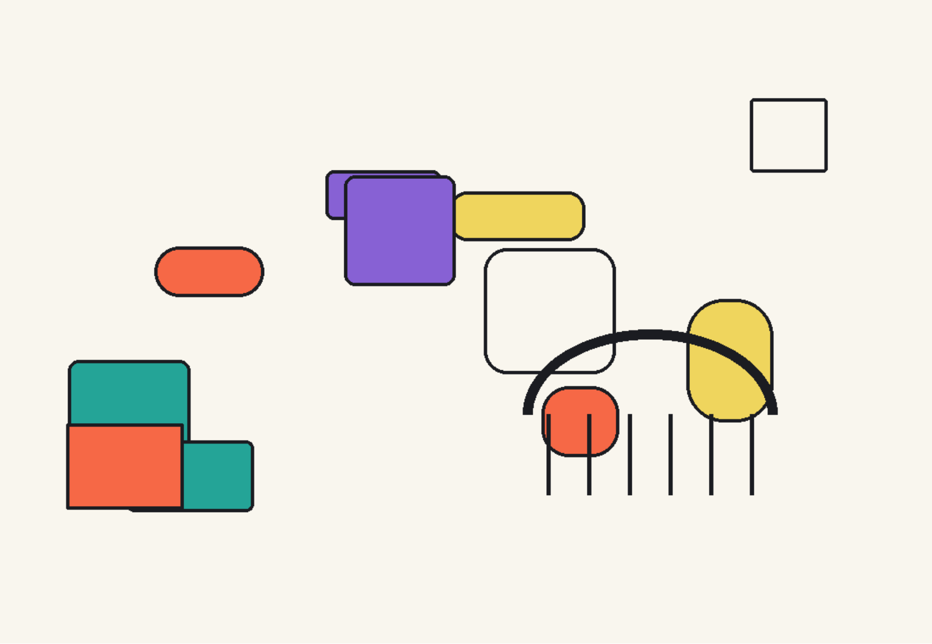

चित्र 11

सिपाही महुआकेँ ठण्ढा स्वरमे कहलक — 'सभटा पाइ चुका देल गेल अछि, अहाँकेँ कोनो मँगनीमे नहि लऽ जा रहल छथि' — ई शब्द महुआक हृदयकेँ छेदि गेल। ओ खाली एकटा व्यापारक वस्तु बना देल गेल छलि, बिनु अपन इच्छाक।

ई सत्य जानि महुआक भीतर कोनो पीड़ा नहि, एकटा दृढ़ता जागल। ओ स्थिर भऽ गेलीह — बाहरसँ शान्त, भीतरसँ एकटा निर्णय पाकल छल।

चित्र 12

सौदागर आ सिपाही सभ बुझलक जे महुआ मानि गेल अछि — ओकर स्थिरताकेँ आत्मसमर्पण बुझि लेल गेल, जखन कि ई आत्मसमर्पण नहि, आत्मरक्षाक अन्तिम योजना छल।

तखने, बिनु कोनो चेतावनीक, महुआ धारमे कूदि पड़लि! ई क्षण एहि गाथाक सभसँ साहसिक आ करुण मोड़ छल — एकटा युवतीक अन्तिम स्वतन्त्रताक चयन।

अध्याय ७ : धारमे साहस

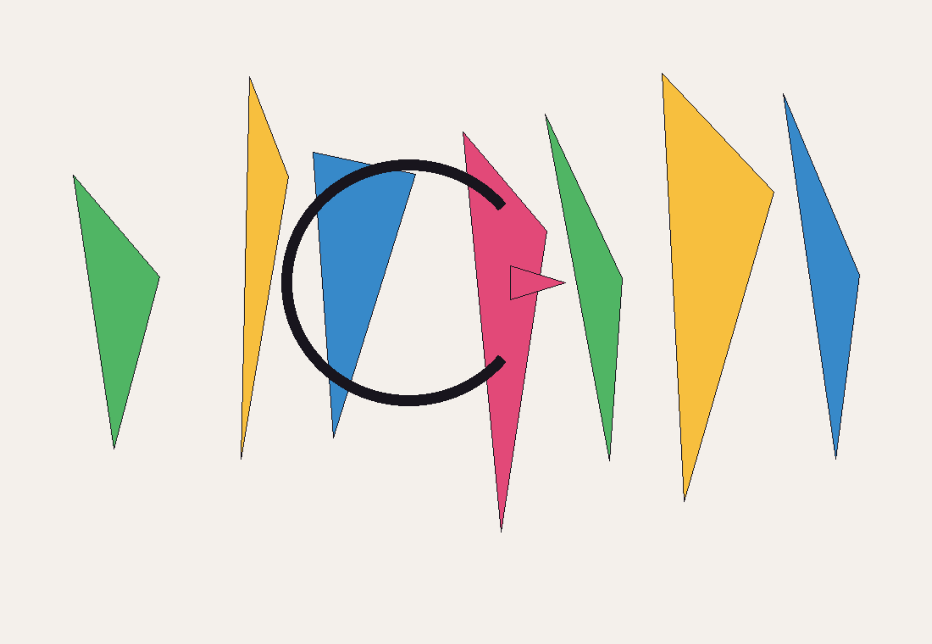

चित्र 13

महुआ उल्टा धारमे मोरंग दिस निकलि जाए चाहलक — जतय ओकर प्रेमी छल, ओकर लेल सात पालक नाव लेने प्रतीक्षामे। ई अन्तिम आशा, अन्तिम प्रयास छल — प्रेम धरि पहुँचबाक, बिक्रीसँ मुक्त हेबाक।

मुदा भरल धार, तीव्र प्रवाह, आ महुआक थाकल शरीर — ई सभटा एकसंग ओकरा विरुद्ध छल। महुआक साहस अपार छल, मुदा प्रकृतिक शक्ति ओकर बलसँ पैघ छल।

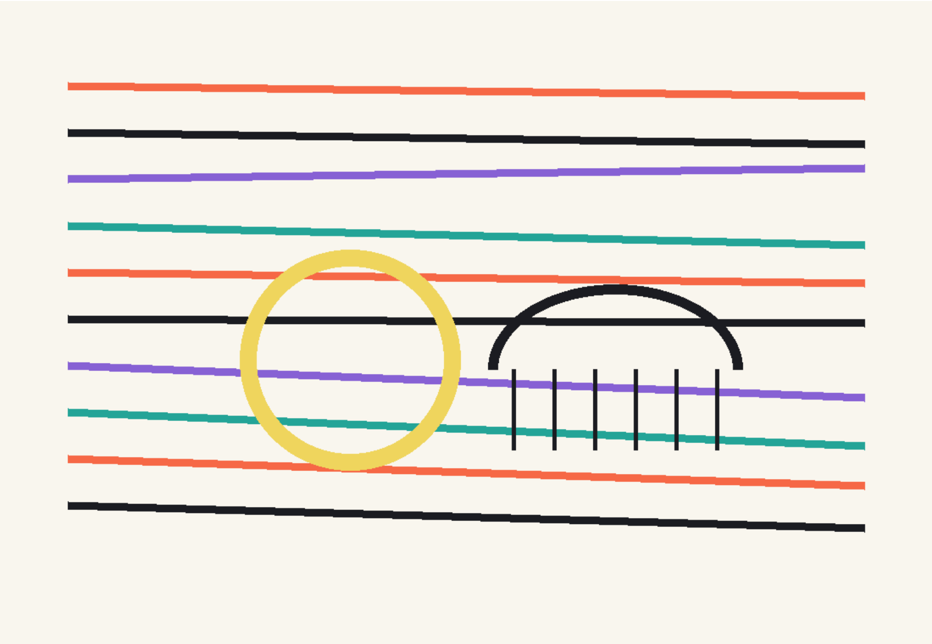

चित्र 14

एहि बीच एकटा अप्रत्याशित घटना भेल — सौदागरक छोटका सिपाही, जे महुआसँ गुप्त रूपसँ प्रेम करए लागल छल, ओहो कूदि गेल कोशिकीक धारमे — महुआकेँ बचएबाक लेल, वा ओकर संग रहबाक लेल।

मुदा धारक शक्तिक आगाँ दुनू असहाय भऽ गेल — महुआ आ ओ सिपाही, दुनू डूमि गेल! ई अन्त करुण छल — एकटा प्रेम जे कहियो पूर्ण नहि भेल, आ एकटा नव प्रेम जे जनमितहि खतम भऽ गेल।

अध्याय ८ : घटवारिनक अमरता

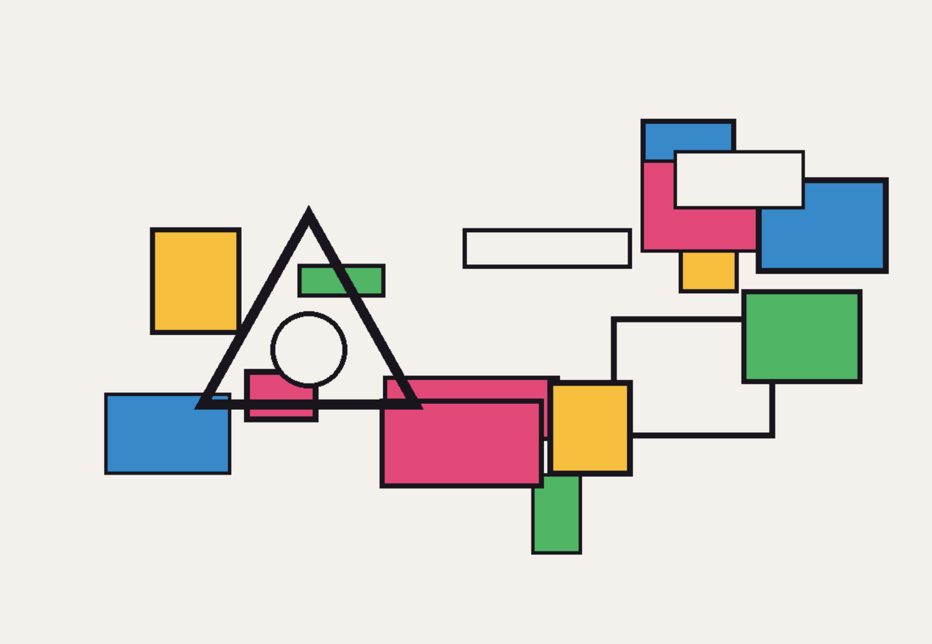

चित्र 15

महुआक कथा एतय समाप्त नहि होइत अछि। अखनहुँ साओन-भादवक धारमे कोनो घटवारकेँ कखनो काल महुआ देखा पड़ैत छथि — एकटा आत्मा जे धारमे सदा लेल जीवित अछि।

कोनो खिस्सा वचनहारकेँ ओ देखा जाइत अछि, आ जखने ओ महुआकेँ देखैत अछि, त' खिस्सा शुरू भऽ जाइत अछि — 'एकटा छलीह महुआ घटवारिन...' — गाथाक ई चक्रीय आरम्भ ओकर अमरताक प्रतीक थिक।

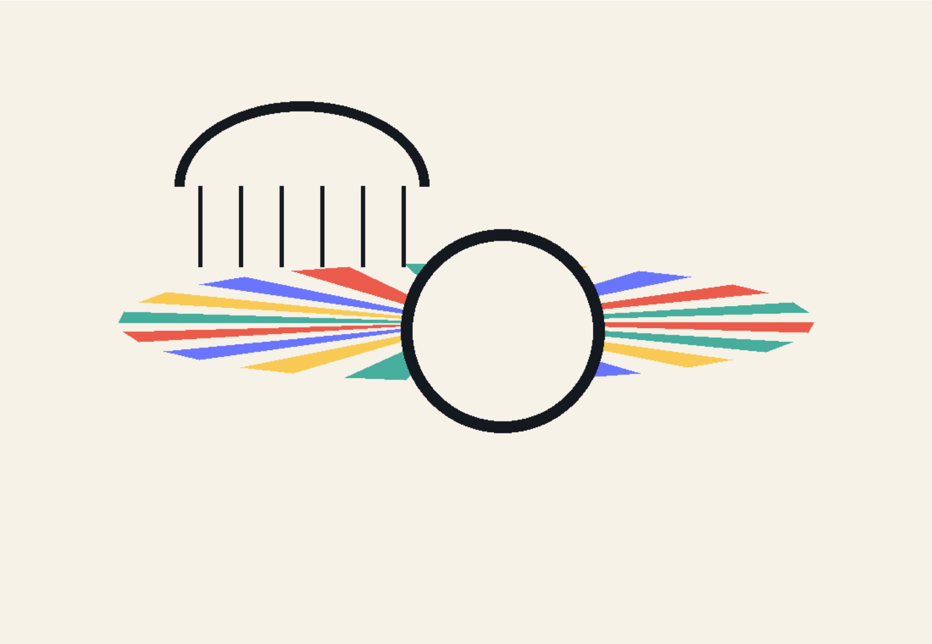

चित्र 16

महुआक गाथा मिथिलामे स्त्रीक सतवंती, साहस, आ बलिदानक प्रतीक बनि गेल अछि। एकटा एहन कन्या, जे अपन घरमे उपेक्षित रहलि, अपन माए द्वारा बेचल गेल, मुदा अपन स्वाभिमान आ प्रेम कहियो नहि त्यागलक।

आइयो परमान आ कोशिकीक धारमे साओन-भादवक रातिमे लोक महुआक स्मृतिमे सतर्क रहैत अछि — ओकर गीत गबैत अछि, ओकर बलिदानकेँ सम्मान दैत अछि। महुआ घटवारिन — एकटा गरीब घरक कन्या, जे अपन मृत्युसँ अमर भऽ गेलि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in